class 11th c
sub Hindi
date 4/5/20
learn and
write In fair
notebook

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न

|प्रत्येक 2 अंक|

1 'हम तौ एक एक करि जांनां' पद का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्रस्तुत पद में कबीर के अनुसार, परमात्मा कण-कण में व्याप्त है और आत्मा भी इसी का एक अंश है, लोग अज्ञानवश ही इन्हें अलग-अलग मानते हैं। कबीर हवा, पानी, प्रकाश आदि का उदाहरण देकर यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि भिन्न-भिन्न स्वरूप वाले प्राणी केवल बाहरी रूप से अलग हैं, आंतरिक स्तर पर हृदय में विद्यमान परमात्मा एक ही है। मनुष्य भौतिक सुखों के लोभ में यह समझ नहीं पाता कि यह परमात्मा अनश्वर है और आत्मा परमात्मा का अंश होने के कारण आत्मा भी अनश्वर होती है।

2 'संतों देखो जग बौराना' पद का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्रस्तुत पद में कबीर कहते हैं कि लोग अज्ञानता के कारण मूर्तिपूजा, माला जपना, तिलक लगाना इत्यादि बाह्याडंबरों में पड़ कर ईश्वर को प्राप्त करने का प्रयास करते रहते हैं। अज्ञानता के कारण ही वे राम और रहीम को अलग-अलग मानकर आपस में लड़ते हैं। वे कहते हैं, ईश्वर को इन बाह्याडंबरों से प्राप्त करना असंभव है। उसे तो केवल सहज भक्ति के मार्ग पर चलकर ही पाया जा सकता है।

3 ईश्वर के स्वरूप के बारे में कबीर ने क्या कहा है?

उत्तर ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कबीर ने कहा है कि ईश्वर एक है और उसका अंश ही सभी प्राणियों में समाया हुआ है। सभी प्राणियों का स्वरूप भिन्न-भिन्न है, लेकिन तात्विक रूप से वे एक हैं, क्योंकि उनमें एक ही परमात्मा का अंश समाहित है तथा वह अनश्वर है।

4 कबीर पाखंडी गुरुओं के संबंध में क्या टिप्पणी करते हैं?

उत्तर पाखंडी गुरुओं के संबंध में कबीर कहते हैं कि ये स्वयं अज्ञानी होते हैं। वे स्वयं ही सांसारिक माया जाल में फँसे होते हैं, इसलिए वे अपने शिष्यों को भी गलत मार्ग ही बताते हैं। वे घूम-घूम कर लोगों को गुरु मंत्र देते हैं, उन्हें अपना शिष्य बनाते हैं, किंतु स्वयं अहंकार में डूबे रहते हैं। ऐसे अज्ञानी एवं पाखंडी गुरुओं से बचना चाहिए, अन्यथा बाद में पछताना पड़ता है।

Shot on realme U1